अंतरा-शब्दशक्ति

सुगंधा

(हायकु संग्रह)

किरण मिश्रा 'स्वयं सिद्धा'

सुगंधा

(हाइकु संग्रह)

किरण मिश्रा "स्वयंसिद्धा"

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-17-9

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८© किरण मिश्रा "स्वयंसिद्धा"

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कंप्यूटर्स, वारासिवनी

'SUGANDHA by KIRAN MISHRA 'SWAYAMSIDDHA'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं |

सुगंधा

हिंदी की नयी काव्यधारा में "हाइकु विधा" एक लोकप्रिय विधा के रूप में अपना एक स्वतन्त्र स्थान निर्धारित कर चुकी है "हाइकु"अनुभूति के चरम क्षण की गरिमायुक्त काव्य रचना है! जिसे 5/7/5 वर्णक्रम की त्रिपदी में उतारना होता है!

"हाइकु" जापानी पद्य शैली की एक अक्षरिक छन्द प्रणाली है, जो त्रिपदी,सारगर्भित,गुणात्मक गरिमायुक्त विराट सत्य की सांकेतिक अभिव्यक्ति जिसमें बिम्ब स्पष्ट हो एवं ध्वन्यात्मकता, अनुभूत्यात्मकता लयात्मकता आदि काव्यगुणों के साथ साथ संप्रेषणीयता पूर्ण काव्य रचना है !इसे आशु कविता भी मानी जा सकती है ! जिसमें काव्य के सभी गुणों की अपेक्षा की जा सकती है ! इस हाइकु विधा को काव्य के रूप में प्रतिष्ठा प्रदान करने वाले कवि "मात्सुओ बाशो" हैं जो जापान के प्रसिद्ध कवि हैं!

मेरी हाइकु लेखन की यात्रा अत्यन्त अल्पावधि करीब दो वर्षों की..हैं..
जब मेरी त्रिपदी और चतुष्पदी रचनाओं में भाव गाम्भीर्य का आकलन कर प्रसिद्ध हाइकु लेखक एवम् संपादक, आलोचक "राजेन्द्र परदेशी" जी ने मेरी कुछ लघु कविताओं को हाइकु रूप दे मुझे हाइकु लेखन के लिये प्रेरित किया...
फिर अचानक एक दिन आदरणीय मित्र "प्रदीप कुमार दाश दीपक जी" ने अपने "हाइकु मंजूषा" नामक हाइकु ग्रुप से मुझे जोड़ा जो कि आजके हिन्दी जगत के जाने माने हाइकुकार और संपादक तथा समालोचक हैं और जिन्हें मैं अपनी जापानी काव्य विधा के लेखन का गुरू भी मानती हूँ...उनके सानिध्य और मार्गदर्शन में मेरी लेखनी हाइकु यात्रा पर निकल पड़ी !मेरे भाव हाइकु काव्य गंगा में अवगाहन कर नित रचते और निखरते चले गये !इस यात्रा में अब तक मेरे तीन साझा हाइकु संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं ! आदरणीय प्रदीप कुमार दाश के संपादन में "झांकता चाँद" और "हाइकु मंजूषा "तथा आदरणीय संजय कौशिक विज्ञात के संपादन में "हाइकु की सुंगध"..जिसे हाइकु मर्मज्ञों द्वारा अति सराहना मिली..

जिसके लिये मुझे "हाइकु मन्जूषा रत्न सम्मान 2017"और "मात्सुओ बाशो कलम की सुगन्ध सम्मान से 2018"से सम्मानित किया गया "सुगंधा" मेरा हाइकु जगत में अपने हाइकु संग्रह का लघु प्रयास है...आप सभी सुधिजन..मेरे इस हाइकु संग्रह को पढ़ अपनी अमूल्य प्रतिक्रिया और आशीर्वाद प्रदान कर मेरे इस लघु प्रयास को विस्तृत आकाश प्रदान करें...!

किरण मिश्रा "स्वयंसिद्धा"

आर्शीवचन

"हाइकु" विश्व की बहुचर्चित लघु काव्य विधा है । इस साहित्यिक सफर में हाइकु साधना में लीन विदूषी कवयित्री किरण मिश्रा जी की रचनाधर्मिता से मैं पूर्ण परिचित हूँ । ये मेरा सौभाग्य रहा है कि जापानी छंदों में ताँका, रेंगा, चोका , सेदोका शैलियों की रचनाओं में वे मुझे गुरु मानती हैं । मुझे यह कहने में गर्व महसूस होता है कि किरण जी हमारी प्यारी शिष्या हैं और वे जापानी छंदों के क्षेत्र में पूर्णतः महारत हासिल करने वाली सिद्ध कवयित्री भी हैं । इनके कई हाइकु "हाइकु मञ्जूषा", और "झाँकता चाँद" तथा 24 ताँका रचनाएँ ऐतिहासिक ताँका संकलन "ताँका की महक" में, 10 चोका रचनाएँ "चारु चिन्मय चोका" में संपादन किया हूँ । मेरे द्वारा संपादित विश्व के प्रथम रेंगा संग्रह "कस्तूरी की तलाश" में भी वे सक्रिय सहभागी रचनाकार रही हैं । इस बीच प्रसन्नता का विषय यह भी कि "अन्तरा शब्द शक्ति" द्वारा किरण जी का एक वैयक्तिक हाइकु संग्रह "सुगंधा" नाम से प्रकाशनाधीन है ।

हाइकु के क्षेत्र में इनकी साहित्यिक रचनाधर्मिता व सारस्वत सेवा निश्चय ही वंदनीय है । इस सारस्वत साधना में आप इसी तरह सदैव यश व कीर्ति हासिल करती रहें । मेरी शुभकामनाएँ व शुभाशीष आपके साथ सदैव है, मैं आशा करता हूँ कि यह संग्रह आपको और अधिक यश व कीर्ति प्रदान करने में सहायक हो, इसी मंगलकामनाओं के साथ आपको मैं पुनः हार्दिक बधाई ज्ञापित करता हूँ ।

प्रदीप कुमार दाश "दीपक"
व्याख्याता : हिन्दी
शास.उ.मा.वि.रजपुरी
जिला - सरगुजा (छत्तीसगढ़)
पिन - 497111
मो.नं. 7828104111

भोर /साँझ

खेलती निशा
झील में उछाल के
चाँद की गेंद !

*

सूर्य प्रतीक्षा
सजाती सांध्यवधू
क्षितिज सेज!

*

भोर किरण
सुरभित बयार
खिली कलियाँ !

*

शर्म से लाल
नयी नयी दुलहन
भोर के गाल!

*

सिंदूरी ऊषा
नृत्य लहरों पर
सागर मुग्ध !

*

बासन्ती भोर
पलाश दिनकर
क्षितिज कोर!

*

सन्ध्या आँचल
खेल रहा सूरज
छुपमछुप्पी !

*

जाड़े की धूप
अलसाई पसरी
साँझ देहरी !

*

ऊषा सुन्दरी
ओढ स्वर्ण रश्मियाँ
खिली आँगन!

*

निशा की गोद
छुप गया सूरज
चाँद को देख !

*

ऊषा सुन्दरी
बाट जोहती सूर्य
खिली पलाश !

*

सिन्दूरी साँझ
क्षितिज अंगनाई
खेलती फाग!

*

सान्ध्य सुंदरी
निहारे प्रियतम
लाली चूनर !

*

चन्दा दुल्हिन
निहारता चकोर
न उगे भोर !

*

कविता/प्रकृति

स्मृतियां वीथी
विचरते जज्बात
उगी कविता !

*

लफ़्ज़ घुले
भावनायें मचली
कविता बही !

*

शब्द मंथन
भावों की अभिव्यक्ति
काव्य सृजन !

*

काव्य सरिता
पवित्र शब्दावली
बहे गंगा सी !

*

मन सरिता
विचार गंगाजल
पवित्र आत्मा !

*

काव्य सरिता
मन के अहसास
बुझाती प्यास!

*

फलित सृष्टि
विस्तारित प्रकृति
ब्रह्म बीज !

*

शस्य श्यामला
प्रकृति रंगरेज
मोहिनी धरा

*

धरा अर्चना
कुंकुम वसुन्धरा
झरे पलाश !

*

चुपकी लगी
बिखरे हैं सन्नाटे
टीसता दर्द !

*

प्रकृति छेड़
बो रहा आपदायें
अंध मानव !

*

रोती प्रकृति
मरते जीव जन्तु
वन विनाश !

*

रूह का तोता
तोड़ के उड़ गया
जिस्म पिंजरा !

कहीं न छांव
धूप में जल रही
प्यासी गौरैया !

*

सूरज /चाँद

सूरज घट
उदधि पनघट
भरती विभा !

*

सद्यस्नाता सी
खिल उठी सरिता
सूर्य दुलार !

*

शर्म से लाल
सूरज बना दुल्हा
भोर के गाल !

*

सूर्य किरण
पखार रही मुख
सिन्धु दर्पण !

*

प्रचन्ड सूर्य
झरते गुलमोहर
धरा रंगोली !

*

सूरज हंसा
गुनगुनाये अलि
महकी कली !

*

भोर लालिमा
चूमता दिनकर
बिहँसे दिन !

*

रक्ताभ सूर्य
धरती को चूमती
स्वर्णरश्मियाँ !

*

चाँद झूलता
लहरों पर झूला
सिन्धु झुलाये !

*

शुभ्र वसना
पूर्णिमा की चाँदनी
निहारे चाँद !

*

बावला चाँद
चूमने को मचले
झील में अक्स !

*

ख्याली पुलाव
बना रहा मानव
चाँद पर घर !

*

सितारो जड़ी
फलक की चूनरी
चाँद ने ओढ़ी!

*

शशि पूनम
छेड़े भैरव राग
उर्मि हृदय !

*

"मन"

मन की पाँखें
फैलाती इन्द्रजाल
ख्वाब कमाल !

*

जिन्दगी धूप
यायावर सा मन
ढूँढता छाँव !

*

तितली मन
रंग बिरंगे ख्वाब
छूने को मचले !

*

घट भीतर
मन मीन प्यासी
अन्तस राम !

*

शक गुबार
उठता जब मन
चैन हवन !

*

मन के झूले
कर्म के पेंग बढ़ा
नभ को छूले!

*

इत्र मुस्कान
सुगन्धित जीवन
महके मन !

*

शून्य सा मन
ढूँढ रहा क्षितिज
ओर न छोर !

*

मन मदिरा
तन बने है प्याली
शून्य आत्मा !

*

दिल अलाव
जलते तन मन
प्रेम अगन!

*

मन प्रांगण
नाचा मयूर तन
पिया दर्शन !

*

महकी रूह
खिला मन आँगन
प्रेम सुमन !

*

वाणी दर्पण
मनस भावना की
तोल के बोल !

*

तृषा दमन
मोक्ष प्रभु शरण
मैं समर्पण !

*

"यादें"

मन तुलसी
बारती नित साँझ
यादों के दीप !

*

शून्य सा मन
यादें बनी जोगन
नैनन नीर !

*

इन्द्रधनुषी
मन आकाश उगी
यादें तुम्हारी !

*

मन नगरी
बरसी ज्यों बदरी
नैन गगरी !

*

मन पुकारे आ
यादों के पनघट
ओरे मोहना !

*

जलाती नित
मन की लालटेन
यादें देहरी !

*

बासन्ती मन
कोयल सी चहकी
यादों की भोर !

*

झील सा मन
अक्स बन उतरी
पिया की यादें !

*

बिलोता मन
समुद्र मंथन सा
यादों का घट !

*

मन बसंत
महकी अमराई
यादें मंजरी !

*

यादें सागर
अन्तस ज्वार भाटा
अश्रु सुनामी !

*

यादें पोटली
प्रेम तन्दुल लिये
मैं सुदामा सी !

*

यादों के पट
खोल रही घूँघट
बासन्ती हवा !

*

प्रेम पियाला
मदिरालय यादें
पीते ही मस्त !

*

पाती/प्रेम

नेह की डोरी
बँधी कथा स्मृतियाँ
बाँचते पत्ते !

*

मीरा दीवानी
इश्क़ का रंग नीला
जहर पीली !

*

प्रेम का बीज
उगा रही स्मृतियाँ
हृदय चीर !

*

एक स्वरूप
प्रेम ही परमात्मा
दूजा न रूप !

*

मृगतृष्णा सी
तोरी प्रीत साँवरे
मिलना कैसे!

*

प्रीत अनोखी
साँवरे रंग राची
राधा प्यारी !

*

प्रेम डगर
कंटक पथगामी
दाहक अग्नि !

*

प्रेम पतंगा
जलता अहनिशि
विरहानल !

*

नेह का बीज
उगी मन आँगन
प्रेम कविता !

*

लाल गुलाब
प्रिय की मनुहार
नेह की पाती !

*

प्रेम प्रतीक
समर्पित है तुम्हें
मन गुलाब !

*

प्रीत का गीत
कलकल निनाद
निर्झर राग !

*

वृक्ष की पाती
बाँच रहा पवन
प्रेम की थाती !

*

नेह सौगात
प्रियतम की पाती
प्रिया लजाती !

*

नैन/अलकें

उगता सूर्य
जगमगाता चाँद
दो आँखें तेरी !

*

ख्वाब प्रतीक
कल्पनायें निमित्त
बाँचते नैन !

*

पलकें सेती
नयनों के द्वीप में
अश्रु के मोती !

*

कटारी नैन
लहराती अलकें
डसती चैन !

*

नैनन नीर
तुम बिन मोहन
हिय में पीर !

*

नयनधार
बेंधे हृदय द्वार
भौंहें कटार !

*

उनींदी आँखें
रूपहले सपने
भोर गवाह !

*

नेत्र भिगोते
दिल और जज्बात
जागती रात !

*

बहके नैन
खिले मन उद्यान
प्रेम प्रसून !

*

नैन पुष्प
अधर नव पाटल
खिला वसन्त !

*

रक्त अधर
कूंजते पुष्पानन
नैन भ्रमर !

*

खिलाता कली
पी मकरंद अलि
महके गली !

*

खुली अलकें
मधुरस छलके
नैन पियाले !

*

नैन भ्रमर
मुकुलित कँवल
मनस सर !

*

ज़िन्दगी

जिन्दगी जुआ
खेल रहा इन्सान
झूठ गठरी !

*

मत रूकना
चलना ही ज़िन्दगी
कहे झरना !

*

जिन्दगी मरू
उम्मींदें मृगतृष्णा
भटके रूह !

*

कर्म आइना
ज़िन्दगी की बही का
लेखा सम्हाल !

*

जीवन राग
सुनाता है निर्झर
खुद बैरागी !

*

प्रीत का गीत
कलकल निनाद
जीवन राग !

*

फूँकते प्राण
पाषाण में जीवन
मीठे झरने !

*

जिन्दगी नाव
इच्छाओं का सागर
डूबता मन !

*

भागमभाग
घुटती भावनायें
जिन्दगी रेल !

*

मन चंदन
सुगन्धित यौवन
महुआ तन !

*

जीवन रथ
मन डोर पकड़
बढ़ता चल !

*

बहती नदी
हरियाली जनती
जीवन दात्री !

*

मन नगरी
बरसी ज्यों बदरी
नैन गगरी !

*

महकी रूह
खिला मन आँगन
प्रेम सुमन !

*

कश्ती /नाव

कागज़ कश्ती
लाद रहा ख्वाहिशें
कोई पागल!

*

कागजी नाव
सम्हाल कहाँ पाती
मन सैलाब !

*

कागजी नाव
ढो रहा है इंसान
रिश्तों का बोझ !

*

भावों की कश्ती
बैठ होते हैं पार
शब्द सवार !

*

ज़िन्दगी नाव
उदासियाँ भँवर
उम्मीदें तट!

*

सच की कश्ती
सदा पार लगाती
मझधार से !

*

माया नगरी
ढोता फिरे मानव
लोभ गठरी !

*

जिन्दगी नाव
इच्छायें हैं सागर
डूबता मन !

*

कागजी नाव
माया मोह सवारी
डुबोते रिश्ते !

*

मन पतंग
लिपटी डोर संग
छूने आकाश !

*

मन की नाव
भावनाओं से भरी
कभी न डूबे !

*

पतंग मन
रंग बिरंगे ख्वाब
हौंसले बुलंद !

*

मन पतंग
छूने को हैं आतुर
ख्वाहिंशें चाँद !

*

पतंग मन
उत्कंठायें क्षितिज
इच्छा अनंत !

*

वर्षा/मेह

काले अक्षर
बन शब्दों की बूँदें
भिगोते मन!

*

दूर सजन
घिर आयीं पलकें
मेघ सघन !

*

अंतस फूटी
नयनों में उमड़ी
याद बदरी !

*

पनीली आँखें
बूंद बूंद बरसे
नेह तरसे !

*

गा रहे मेघ
बरसे रसधार
राग मल्हार !

*

विह्वल नेह
उमड़ रहे मेह
वसुधा गेह !

*

मेघ वाचाल
गाये भैरव राग
बूँदों की थाप !

*

घन भुंजग
लिपटे नभ अंग
फिरे मंलग!

*

धरा प्रेयसी
उमड़ते बादल
प्रेम विह्वल !

*

मन नगरी
बरसी ज्यों बदरी
नैन गगरी !

*

बर्षा का गीत
छमछम संगीत
गा रहीं बूँदे!

*

बरसे मेघ
लहराई चूनर
हरित धरा !

*

नेत्र कानन
पलकों पर झूला
झूलें बुंदियाँ !

*

कमल पत्र
चमकती मोती सी
बरखा बूँदें !

*

जल /निर्झर

जल धारायें
गाती मिलन गीत
पाषाण प्रीत !

*

भ्रमित मन
ढूँढता मरूजल
तड़पे प्यासा!

*

पानी का दान
दो प्यासे को जीवन
बनो महान !

*

प्यासा ही जाने
बूँद बूँद अनमोल
पानी का मोल !

*

जल संचित
भविष्य सुरक्षित
धरा संचित !

*

बचाओ जल
प्यासा न रहे कोई
जीवन कल !

*

रोती चिरैया
सूखी ताल तलैया
रँभाती गैय्या !

*

खत्म कहानी
बेघर हैं पखेरू
दाना न पानी !

*

जल प्रबन्ध
मृदा का संरक्षण
हरित वन !

*

बहाता पीर
पत्थरों का रूदन
निर्झर नीर !

*

बुझाये प्यास
छत जल सकोरा
पंक्षी की आस !

लुप्त जीवन
पछतायेगा इन्सा
जल दोहन !

*

निर्मित ताल
खगवृन्द चहके
धरा महके !

*

पानी बचाओ
जीव जन्तु बचाओ
सृष्टि बचाओ !

*

बेटी /स्त्री

खिलते कुल
महके फुलवारी
बोओ बेटियाँ !

*

अमूल्य निधि
दोनों कुल की शान
ना मारो बेटी !

*

है महापाप
बेटी है अनमोल
गर्भ में हत्या !

*

पढ़े बेटियाँ
सूरज सी चमके
दूर अँधेरा !

*

मधुर गन्ध
ममत्व की सुगन्ध
शिशुत्व बन्ध !

*

दोगे मान तो
मिलेगा सम्मान भी
बहू भी बेटी !

*

दहेज दैत्य
निगलता जीवन
टूटता घर !

*

मैके की आन
ससुराल की शान
हँसती बेटी !

*

बेटी पढ़ाओ
कुत्सित सोच विदा
बेटी बचाओ !

*

सुबकती माँ
बिहँस रहे शिशु
उम्र का फेर !

*

बौना अस्तित्व
गृहिणी बोनसाई
सजाते घर !

*

दोगली सोच
पति परमेश्वर
पत्नी है हेय !

*

अग्नि परीक्षा
आज भी घर घर
जलती सीता !

*

गृहस्थी नीड़
बनाते माता पिता
बच्चे हैं फुर्र !

*

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - किरण मिश्रा

जन्म - 6 मार्च 1981

शिक्षा - एम.एड., संस्कृत, बी.ए., एन.ई.टी.

पता - फ्लैट नं. 1506, टावर ए-9, जेक्लासिक. पी. सेक्टर-134, नोयडा, उत्तर प्रदेश, 201304

मो.नं. - 9958437755

ई मेल - iimkiranmishra@gmail.com

कार्यक्षेत्र - पूर्व आकाशवाणी उद्घोषिका, वर्तमान में गृह संचालिका

प्रकाशन

1. झाँकता चाँद (हाइकु संग्रह), 2. हायकु की सुगंध (साँझा हाइकु संग्रह) 2017, 3. कस्तूरी की तलाश (विश्व की प्रथम रेगा संग्रह), 4. तांका की महक (सांझा ताँका संग्रह), 5. हाइकु मंजूषा (सांझा हाइकु संग्रह),

सांझा प्रकाशन 6. संदल सुगंध,7. नव काव्यांजलि, 8. गुलनार, .9 आखर, 10. अनुभूति, 11. मृगनयना, 12. अविरल धारा, 13. उजास, 14. अभिव्यक्ति, 15. साहित्य उदय, 16. अपूर्वा, 17. अनुबंध, 18. भारत के युवा कवि एवं कवियत्रियाँ, 19. नारी सागर, 20. अपना शान तिरंगा, 21. कस्तुरी की तलाश (समीक्षा पत्रक)। हिन्दी सागर, राजस्थान पत्रिका, लोकजंग (मध्यप्रदेश), सौरभ दर्शन (राजस्थान), दैनिक मैट्रो (नोयडा), नवभातर, टू मीडिया, टू टाइम्स, अमर उजाला (नोयडा), नवप्रदेश, वर्तमान अंकुर एवं भारत के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा ई पत्रिकाओं जैसे - प्रयुक्ति (दिल्ली), अंतरा शब्द शक्ति, साहित्य पीडिया, कागज दिल, अमर उजाला आदि में नियमित रचनाएं प्रकाशित

सम्मान

1. हायकू मंजूषा रत्न सम्मान वर्ष 2017, 2. श्रेष्ठ हिन्दी कवयित्री सम्मान (विश्व हिन्दी रचनाकार मंच 2017), 3. काव्य सागर सम्मान 2017 (साहित्य सागर), 4. श्रेष्ठ युवा रचनाकार सम्मान (विश्व हिन्दी रचनाकार मंच), 5. नारी सागर सम्मान 2018(विश्व हिन्दी रचनाकार मंच), 6. साहित्य के दमकते दीप साहित्य सम्मान (2017), 7. मात्सुओ बासो कलम की सुगन्ध सम्मान, 8. सर्वोत्कृष्ट कलम की सुगंध सम्मान (अर्णवकलशएसोसिएशन), 9. भाषा सारथी सम्मान 2018 (मातृभाषा उन्नयन संस्थान), 10. अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2018

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...

www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-17-9

मूल्य- 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com